UGC Approved Sr. No. 49366

SRJIS

ISSN -2278-8808

GLOBALLY INDEXED
IMPACT FACTOR SJIF 2016
6.177

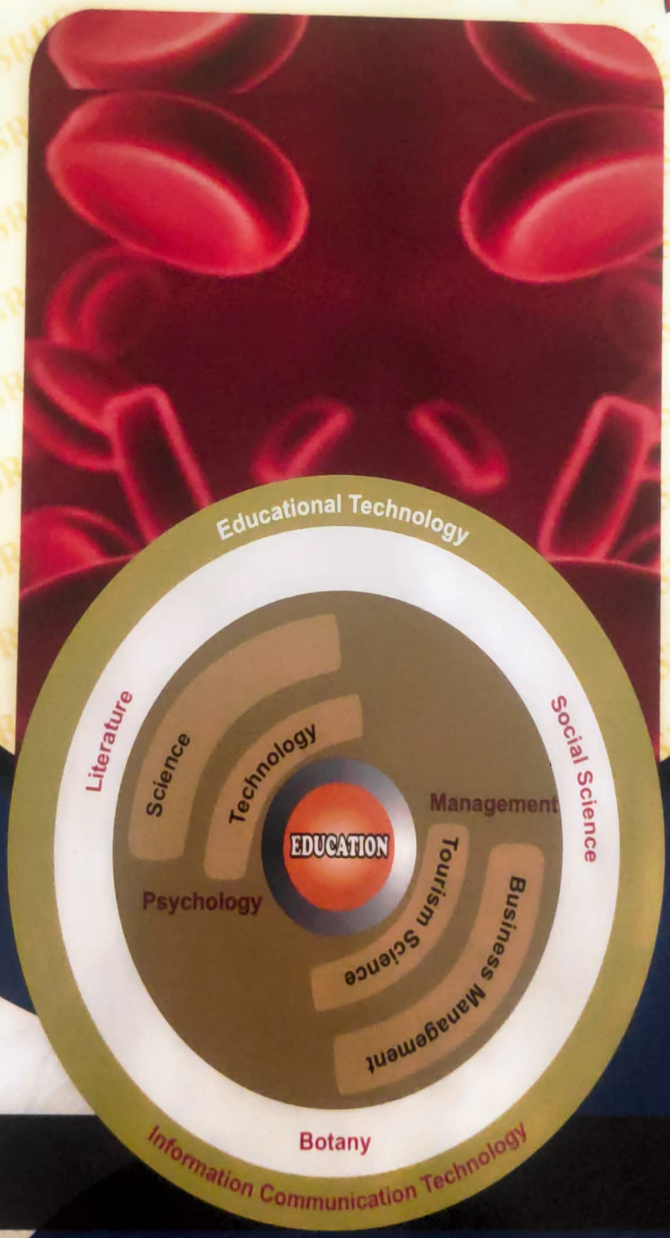

An International Peer Reviewed

Referred Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

JAN - FEB , 2018. VOL. 5, ISSUE -46

EDITOR IN CHIEF : YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph.D.

IMPACT FACTOR SJIF 2016 = 6.177
ISSN 2278-8808

UGC SR. NO. 49366

AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, QUARTERLY

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

Special issue of

Mula Education Society's **Arts, Commerce & Science College, Sonai**

on

State Level Conference

on

"Employment Opportunities in Language and Literary Studies"

7th & 8th February, 2018,

PRINCIPAL & CHIEF CONVENER
Dr. Shankar L. Laware

CONFERENCE CONVENER
Dr. M.G.Varpe

COORDINATOR
Dr. S. P. Khedkar

EDITOR IN CHIEF
YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph. D.
Associate Professor, MAAER'S MIT School of Education & Research, Kothrud, Pune.

EDITOR'S

NISHIKANT JHA, Ph. D.
Thakur Art,Commerce & Science College
Kandiwali West,Thakur village, Mumbai

SHABIR AHEMAD BHATT, Ph. D.
Associate Professor, Department of Education, University of Kashmir, India

JACINTA A. OPARA, Ph. D.
Center for Environmental Education
Universidad Azteca, Chalco-Mexico

VAIBHAV G. JADAHV, Ph. D.
Assistant Professor, Department of Education & Extension, University of Pune.

Amitesh Publication & Company,
TCG's, SAI DATTA NIWAS, S. No. 5+4/ 5+4, D-WING, Flat No. 104, Dattnagar, Near Telco Colony, Ambegaon (Kh), Pune. Maharashtra. 411046. India. **Website:** www.amiteshpublishers.com, www.srjis.com, **Email:** srjisarticles16@gmail.com

भाषा के विद्यार्थियों के प्रति समाज का दृष्टिकोन और हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाएं

प्रा. धनेश मच्छिंद्र माने
हिंदी विभाग, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई

भूमंडलीकरण और आधुनिकता की इस दौर में मनुश्य का जीवन व्यावहारिक बन गया है। इस व्यावहारिक दुनिया में हर चीज का मोल देखा जाता है। इंसान हमेशा अपने भलाई के बारे में ही सोचता रहता है। मनुश्य अपने भौतिक जीवन में जो वस्तु उसे लाभ दे सकती है उसपर ही वह अपना समय और पैसा खर्च करता है अन्यथा नहीं। शिक्षा के क्षेत्र में भी वह इसी निती का अवलंब करता है। शिक्षा ग्रहण करतें समय वह खुद या आनेवाली पीढ़ियों को यह सलाह देता है कि जिस ज्ञान की प्राप्ति या विशय के अध्ययन से तुम्हें भविश्य में नौकरी या रोजी–रोटी मिल सकती है उसी विशय को लेकर पढाई पूरी करनी चाहिए। यह दृश्टिकोन समाज के हर स्तर पर, हर क्षेत्र में निश्चित रूप से दिखाई देता है। जब भाशा का संबंध रोजगार के साथ जोडा जाता है तब यह एक प्रश्न सामने खडा होता है कि क्या भाशा से पेट भरा जा सकता है ?, क्या भाशा का अध्ययन करने पर रोजगार प्राप्त होगा ? इन प्रश्नों तथा सामाज के मानसिकता का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि रोजगार के संदर्भ में भाशा को लेकर समाज में नकारात्मक भूमिका बनी है। भाशा का अध्ययन करनेवाले छात्रों के प्रति समाज का अलग दृश्टिकोन दिखाई देता है। समाज में भाषा के अध्यताओं से बार–बार प्रश्न पुछा जाता है। 'ये विद्यार्थी भाशा सिखकर आगे क्या करेंगें ?, इन्हें क्या हासिल होगा।?, केवल कहानी या कविता लिखने से पेट नहीं भरता ?, करियर बरबाद करेंगें।? इस प्रकार के नानाविध सवालों से भाशा का विद्यार्थी अपमानित अनुभव करता है। कहीं–कहीं पर तो सुनाई पडता है कि इन्होंने केवल पदवी प्राप्त करने के लिए भाशा का चयन किया है। ऐसे कई सवाल भाशा का अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों को सोचने के लिए मजबूर करते हैं। ऐसे समय विद्यार्थियों के पास कोई जवाब नहीं रहता है। भाशा के प्रति समाज की इसी मानसिकता के कारण भाशा का विद्यार्थी खुद को कमजोर समझकर न्युनगंडता और अपमान भरा जीवन जीने के लिए मजबूर हुआ है। वर्तमान में हिंदी भाशा विद्यार्थियों को इस न्युनगंडता से मुक्ति देने के लिए समर्थ हुई है। क्योंकि हिंदी भाशा में रोजगार के कई क्षेत्र निर्माण हुए हैं। हिंदी अब वैश्विक भाशा बनने के कगार पर है। विश्व के कई देशों में हिंदी बोलनेवालों की संख्या बढ़ रही है। हिंदी को व्यवसाय, बाजार की भाशा के रूप में महत्व मिलने लगा है और साथ ही वह आज तंत्रज्ञान, इंटरनेट जैसे आधुनिक उपकरणों में प्रयुक्त होन लगी है। जिसके कारण हिंदी भाशा सिखनेवालों को निश्चित ही अच्छे दिन है। जो व्यक्ति हिंदी भाशा अच्छी तरह से समझ, लिख और बोल सकता है। याने जिसके पास भाशिक गुणों के साथ वाचन, लेखन, संवाद, भाशण और अभिव्यक्ति कौशल्य है वह कभी भी भूखा नहीं रह सकता। ऐसे विद्यार्थी या व्यक्ति के लिए हिंदी भाशा में रोजगार के कई अवसर प्राप्त हो रहे है। हिंदी भाशा अब केवल बोलने और साहित्य लिखने तक सीमित न

रहकर वह पेट की भाशा बनी है। इक्कीसवीं सदी में हिंदी जो सामान्य लोगों की भाशा है वह रोजी–रोटी पाने का एक महत्वपूर्ण साधन बन गयी है। वह केवल आदान–प्रदान की भाशा न रहकर आम आदमी के व्यवहार की भाशा बनी है। हिंदी दश की और कई राज्यों की राजभाशा होने साथ प्रमुख संपर्क भाशा है। विज्ञापन, मनोरंजन और जनसंचार माध्यमों में हिंदी भाशा का महत्व उल्लेखनीय है और वह दिन–ब–दिन बढता ही जा रहा है क्योंकि हिंदी वि"व के सबसे प्रभावी माध्यम इंटरनेट की भाशा बन गयी है। तकनिकी उपकरणों से जूड़ने के कारण हिंदी में कई रोजगार निर्माण हुए है। विश्व में हिंदी भाशा को व्यवसाय की दृश्टि से देखा जाता है। हिंदी भाशा के बढ़ते महत्व के कारण वर्तमान में हिंदी भाशा में रोजगार के कई अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। कविता कहानी, नाटक, निबंध आदि साहित्य लेखन के अतिरिक्त भी इस भाशा के विद्यार्थियों, नौजवानों के लिए नौकरी और व्यवसाय के क्षेत्र में प्रर्याप्त मात्रा में अवसर है।

1. साहित्य लेखन –हिंदी में विभिन्न विधाओं में साहित्य लेखन कर कई लेखकों ने इसे उपजिविका का साधन बनाया है। साहित्यकारों ने कविता, कहानी, उपन्यास और नाटकों का लेखन कर न केवल धनोपार्जन किया है तो साहित्य की सेवा कर उन्होंने प्रतिश्ठा और उचित सम्मान भी प्राप्त किया है। आज ऐसे कई लेखक है जिनका साहित्य लेखन उनके लिए जिवन जिने का प्रमुख साधन बन गया है। श्रेश्ठ साहित्यकारों कों उनके लेखन के लिए भारत सरकार की ओर से उचित सम्मान एवं पुरस्कार दिया जाता है।

2. सरकारी या प्रशासनिक कार्यालय में रोजगार –केंद्र सरकार एवं हिंदी भाशी राज्यों के प्र"ासनिक एवं विभिन्न कार्यालयों का कामकाज हिंदी भाशा में ही किया जाता है। इन विभागों में हिंदी भाशा में उत्तीर्ण स्नातकोत्तर एवं स्नातकों के लिए राजभाशा अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक आदि पदों पर रोजगार के अवसर उपलब्ध है।

3. अनुवाद का क्षेत्र –अनुवाद के माध्यम से आज हिंदी भाशा के छात्रों को रोजगार के नए व्दार खुल गए है। साहित्य के साथ अन्य कई क्षेत्रों में अनुवादक की आवश्यकता होती है। बॅकिग, न्यायालय तथा प्रशासनिक कार्यालयों में स्थायी रूप से अनुवादक का पद होता है। साथ ही हम घर बैठे भी अनुवाद का कार्य कर सकते है। विदेशी तथा अन्य भारतीय भाशाओं में प्रदर्शित टि. व्हि सिरियल, फिल्मों को आज बड़ी मात्रा में डबिंग कर हिंदी में प्रसारित किया जाता है। साथ ही हिंदी की फिल्में अन्य भारतीय भाशाओं तथा विदेशी भाशाओं में अनुवादित की जाती है। अनुवादक के लिए किन्हीं दो भाशाओं का ज्ञान आवश्यक होता है। इंटरनेट और सॉफटवेअर के जरिए आज अनुवाद कार्य सरल हो रहा है।

4. टंकण व आशुलिपिक –सरकारी कार्यालयों तथा किसी भी क्षेत्र के कार्यालयों में टंककों एवं आशुलिपिकों की आवश्यकता होती है। भारत सरकार एवं विभिन्न राज्यों की राजभाशा हिंदी है। आज प्र"ासकिय कार्य सभी संगणक पर ही किए जाते है। इसलिए इन कार्यालयों में हिंदी टंककों और डी. टी. पी. करनेवालों की आवश्यकता होती है। वर्तमान में भारत सरकार ने अपने विभागों की जानकारी, सुचनाएँ, विभाग का कार्य–व्यापार ऑनलाईन किया है। जिसके चलते कंप्युटर पर कार्य करनेवाले या हिंदी टंकण करनेवाले लिपिकों की आवश्यकता होती है। भासन

इनका चयन प्रतियोगिता परिक्षाओं के दवारा करतें है। हिंदी टंकन करनेवाला अपना खुद का व्यवसाय चला सकता है। विश्वविद्यालयों तथा विभिन्न अनुसंधान केंद्रों पर जो अनुसंधान किया जाता है उन अनुसंधानों की प्रतिलिपी टंकित करने के लिए भाशा का ज्ञान रखनेवाले और कुशल टंककों की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में एक पेज टाइप करने के लिए 40 या 50 रूपए लिए जाते है। तहसिल कार्यालय, पुलिस स्टेशन, न्यायालय, दुयम निबंधक कार्यालय में आवेदन पत्र या विभिन्न प्रकार के डॉक्युमेंट टंकण करने के लिए हिंदी टंककों की बड़ी मात्रा में आवश्यकता होती है। हिंदी भाशा का ज्ञान और टंकण कौशल्य जिन विद्यार्थियों के पास हैं। उन्हें इस क्षेत्र में लाखों की संख्या में पद और रोजगार उपलब्ध हैं।

5. जनसंचार माध्यमों में रोजगार के अवसर– भाशा से जुड़े रोजगार की संभावनाएँ जनसंचार माध्यमों में अधिक दिखाई देती है। क्योंकि हिंदी भारत की ऐसी प्रमुख संपर्क भाशा है जिसे हर व्यक्ति आसानी से समझ सकता है। जन संचार माध्यमों के मुद्रण और दृक श्राव्य माध्यमों में हिंदी ही सबसे प्रभावशाली भाशा है।

5.1 मुद्रण माध्यम / प्रिंट मिडिया

5.1.1 अखबार या पत्रकारिता का क्षेत्र –इस क्षेत्र में पत्रकारों, संपादकों, संवाददाता, प्रूफ रीडरों, लेखकों आदि पदों के रूप में रोजगार की कई संभावनाएँ है। 'मास कम्युनिकेशन' या पत्रकारिता का डिप्लोमा करने पर पत्रकारिता के क्षेत्र में अच्छे रोजगार प्राप्त कर सकते है।

5.1.2 प्रकाशन के क्षेत्र में रोजगार –वर्तमान काल में प्रका"ान के व्यवसाय में बढ़ोत्तरी हो रही है। दिन–ब–दिन नई पत्रिकाएँ छपकर आती है। हर वर्श हजारों की संख्या में विविध विशयों के पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है और इनके कई संस्करण भी निकाले जातें हैं। हिंदी भाशा के ज्ञाता को या अधेता को इस क्षेत्र में कई रोजगार उपलब्ध है। संपादक, प्रुफ रीडर, टंकलेखक आदि कई पदों पर कार्य कर सकतें है।

5.2 श्राव्य माध्यम / इलेक्टॉनिक मिडिया –रेडिओ, आकाशवाणी जैसे क्षेत्र में रेडिओं जॉकी, सुत्रसंचालन, स्क्रिप्ट राइटर, डॉयलाग राइटर, गीतकार, कार्यक्रम संयोजक, कथावाचक आदि के रूप में कार्य कर सकतें है।

5.3 श्राव्य–दृश्य माध्यम

5.3.1 टि. व्ही. धारावाहिक/ दुरदर्शन कार्यक्रम तथा सिनेमा – आज दुरदर्शन या टि. व्हि दुनिया के सबसे प्रभावी मनोरंजन माध्यमों से एक है। श्रव्य एवं दश्य माध्यम होने के कारण दुरदर्शन पर कई चॅनलों की भरमार हुई है। हिंदी भाशा में प्रस्तुति करनेवाले चॅनलों की संख्या प्रर्याप्त मात्रा में है। दुरदर्शन पर मनोंरजन के साथ खेल, साहित्य, राजनीति, सामाजिक, कृशी, सांस्कृतिक आदि विभिन्न कार्यक्रमों का प्रक्षेपण किया जाता है। मनोरंजन को लेकर विभिन्न धारावाहिक, टेली फिल्मे, लघु फिल्मों के साथ अन्य अनेक कार्यक्रमों का निर्माण किया जाता है। जिससे इस क्षेत्र में बड़ी मात्रा में हिंदी के कथा, पटकथा या संवाद लेखकों, गितकारों और भाशा विषेशज्ञों की आवश्यकता होती है। वर्तमान में चॅनलों की संख्या बढ़ रही है। जिससे हिंदी

अध्येता को इस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त हो रहे है। इसके साथ परिचर्चा जैसे कार्यक्रमों का संचालन की दृष्टि से भी काफी संभावनाएँ है।

5.3.2 **विज्ञापन क्षेत्र** – सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में प्रिंट, इलेक्टानिक तथा अन्य माध्यमों के क्षेत्र में हिंदी का बडा ही महत्व है। व्यवसाय के क्षेत्र में विज्ञापन को विषेश स्थान है। इस क्षेत्र मे किसी भी कंपनी को अपने बनाए हुए प्रोडक्ट को कम समय में अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुँचाना है तो वह मिडिया और उस पर दिखाए जानेवाले विज्ञापन की सहायता लेता है। कंपनी अपनी प्रोडक्ट की जानकारी ग्राहकों तक पहूँचाने के लिए ग्राहक जिस भाशा को अच्छी तरह समझता है उसी भाशा में विज्ञापन तैयार करती है। भारत व्यवसाय की दृश्टि से विश्व की एक बड़ी बाजार है। देश–विदेश की अनेक कंपनियॉ विज्ञापन पर करोडों रूपए खर्च करती है। हिंदी भारत की जनभाशा होने के साथ प्रमुख संपर्क भाशा है। इसलिए हिंदी भाशा की अच्छी तरह जानकारी रखनेवाला ही इन कंपनियों को प्रभावीरूप से विज्ञापन लिखकर दे सकता है। कंपनी मुनाफें के लिए ऐसे विज्ञापन तैयार करनेवाले लोगों को अच्छी रकम अदा करती है। ग्राहकों को लुभाने के लिए विज्ञापन में स्लोगन का इस्तेमाल किया जाता है। जिससे ग्राहक प्रभावित होकर वस्तुओं को खरिद लेते है जैसे– 'ठंडा मतलब कोका कोला' यह स्लोगन इतना प्रभावित हुआ की जिससे कंपनी को बहुत बडा लाभ हुआ। आयडिया मोबाइल सिम का विज्ञापन एक आइडिया जो बदल दे आपकी दुनिया'। इस तरह के स्लोगन या विज्ञापन तैयार कर हिंदी भाशा का ज्ञान रखनेवाला अपनी रोजी–रोटी का प्रश्न हल कर सकता है। वर्तमान में भारत सरकार या राज्य सरकारों द्वारा अपने कार्यक्रमों एवं विभिन्न जन उपयोगी सेवाओं की जानकारी विज्ञापन द्वारा ही जनता तक पहुँचाई जाती है। इन विज्ञापनों के लिए प्रभावी एवं मार्मिक स्लोगन की मॉग की जाती है। या अलग–अलग ढंग के विज्ञापन तैयार किए जाते है। उदा– एक कदम स्वच्छता की ओर'। ऐसे स्लोगन या विज्ञापन तैयार करनेवाले प्रतिभाशाली व्यक्तियों की जरूरत हमेशा होती है। यदि कोई अच्छा जिंगल राइटर या कॉपी राइटर हो तो इस क्षेत्र में काफी पैसा मिल सकता है।

6. **शिक्षण क्षेत्र** – भौक्षणिक क्षेत्र में अध्यापक, अनुसंधान कर्ता या विशयतज्ञ के रूप में भाशिक अध्ययन कर्ता अपना करियर निर्माण कर सकता है। भारत में कई स्कुलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य करनेवाले अध्यापकों की कमी है। विदेश में हिंदी को बिजनेस की दृश्टि से महत्वपूर्ण भाशा माना जा रहा है। इसलिए विदेशों में हिंदी भाशा और देवनागरी लिपि के शिक्षण के लिए हिंदी अध्यापक के रूप में काफी रोजगार उपलब्ध है। वर्तमान युग में व्यवसाय या उॅचे पदों पर कार्य करने वाले मॉ–बाप अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहतें है इसलिए स्टूशन क्लास लगाए जाते है या घर पर किसी हिंदी अध्यापकों को बुलाकर अपने बच्चों को उचित शिक्षा दि जाती है।आज विश्व में अनुसंधान को अधिक महत्व दिया जाता है । भारत में भी विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान के लिए आवश्यक सहायता प्रदान की जाती है। अनुसंधान कर्ताओं को फेलोशिप, स्टायपंड, अभिछात्रवृत्ती दी जाती है।भाशा का अध्ययन करनेवाला अपने विशय का गहन अध्येता है तो उसे संगोश्ठि, सभा–समिति, कार्यशाला आदि कई जगहों पर

निबंध वाचक, व्याखाता, विशयतज्ञ, आलोचक के रूप में बुलाया जाता है। इसके लिए उन्हें उचित रकम दि जाती है।

7. **पर्यटन क्षेत्र** –भारत पर्यटन की दृश्टि से एक महत्वपूर्ण देश है। बहुभाशी राश्ट होने के कारण पर्यटकों को पर्यटन स्थलों की जानकारी देने की लिए दुभाशीकों की आवश्यकता होती है। हिंदी भाशा पढ़नेवाले छात्रों को दुभाशी के रूप में पर्यटन क्षेत्र में काफी रोजगार उपलब्ध है।इस प्रकार सारांश रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी भाशा का अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार की काफी संभावनाएँ है। भाशा का अध्ययन करते समय पारंपारिक अध्ययन छोडकर संवाद लेखन, अनुवाद, विज्ञापन लेखन, स्पश्ट वक्ता आदि कई दृश्टि से अध्ययन करते है तो रोजगार की गॅरटी निश्चित है। अन्य क्षेत्रों या विशयों की भॉति इन क्षेत्रों में भी प्रतियोगिता है। इसलिए जिसमें प्रतिभा, योग्यता के साथ परिश्रम करने की ललक है उसे इन क्षेत्रों मे उचित लाभ अव''य होगा। अंत में यही कहा जा सकता है कि

''जिंदगी को वही गढ़ेगे
जो शिलाएँ तोडते है।''